राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 142
विषअमृत
नागराज

©RAJAPOCKET BOOKS

महानगर की सीमा पर स्थित इस 'चिल्ड्रेंस पार्क' को महानगर महापालिका ने खास तौर पर उन लोगों के लिए डेवलप किया है, जो शहर के प्रदूषण और तनाव से दूर एक शांत दिन बिताने आते हैं –
पापा, कैच!
ओ, रोहित! संभल कर!
ओ, रोहित! मुझे दो न?
ये दोनों रोहित और शिल्पा तो बस! न जाने कितनी एनर्जी भरी है दोनों में! मैं तो देखकर ही थक जाती हूं!
पर नजर न लगे, मेरे बच्चे पढ़ने में भी उतने ही तेज हैं जितने खेलने में!
हां! पर एक खराबी भी है! किसी चीज से डरते ही नहीं हैं!
भगवान उस चीज का आविष्कार कब करेगा, जिससे मैं बच्चों को डरा कर कुछ बातें मनवा सकूं!
अरे, डरें उनके दुश्मन! पर हां, तुम तो एक चीज से डरते हो! मुझे पता है!
मैं? मैं डरता हूं! किससे? बताओ तो जरा!
मुझसे! ही ही ही ही ही!
डरते हो न?
ओ शिल्पा! पापा ने तो बॉल को ऐसा 'कट' मारा कि 'बॉल' बनाना बन गई!
अब क्या करें? पापा को बताया तो कहेंगे कि जाने दो, छोड़ दो! छोड़ देंगे तो फिर हम यहां पर क्या करेंगे? घास के तिनके गिनेंगे क्या?
अरे, नहीं! ऐसे तो सारी पिकनिक का सत्यानाश हो जाएगा। आ, बॉल निकालते हैं!

कुछ ही मिनटों बाद दोनों
ाल निकालने की कोशिश
कर रहे थे-
मुझे पकड़े रहना रोहित! तूने अभी थोड़ा-थोड़ा तैरना ही सीखा है। अगर गिर गई तो तेरा स्विमिंग कोर्स अधूरा रह जाएगा।
घबरा मत! अगर हाथ छूटा तो तेरे बाल पकड़ लूंगा!
बच्चों की कोशिशें अभी जारी ही थीं-
कि तभी चिल्ड्रेन पार्क का वातावरण एक भयंकर गुर्राहट से गूंज उठा-
यह कैसी आवाज है?
किसी जानवर की गुर्राहट है!
जंगली जानवर की आवाज लगती है, पर इस पार्क के आस-पास तो कोई चिड़ियाघर तक नहीं है। फिर ये आवाज कैसी है?
ज्यादा अंदाजा लगाने की जरूरत नहीं पड़ी-
क्योंकि जल्दी ही गुर्राहट भरने वाले गले का मालिक नजर आने लगा था-
भागो!
भागो!
गुरिल्ला! यह तो असली गुरिल्ला लग रहा है?
गुरिल्ला यहां पर कहां से आएगा? यहां पर न तो कोई सर्कस है, और न ही चिड़ियाघर।
यह जरूर कोई आदमी है, जो गुरिल्ले की ड्रेस पहनकर मजाक कर रहा है!
यह मजाक नहीं है। कोई आदमी दस फुट का होता है क्या? बच्चों को ढूंढो और भागो!
रोहित! शिल्पा!
पार्क में भगदड़ मचनी शुरू हो चुकी थी-

और खतरे का आभास रोहित और शिल्पा को भी हो रहा था–
कुछ गड़बड़ है, शिल्पा! ये बतखें उस गुर्राहट से डर रही हैं! ओऽऽऽ ह!
रोहित का हाथ अपने हाथ से छूटते ही शिल्पा पानी में आ गिरी–
झील बहुत गहरी है!
न... मैं इसमें तैर नहीं पा रही हूं!
ओ माई गॉड! ओ माई गॉड! तैरना तो मुझे भी नहीं आता?
और आस पास ऐसी कोई चीज भी नहीं दिख रही है जिसे फेंककर मैं शिल्पा को बाहर खींच लूं!
रोहित सोच में डूबा ही हुआ था–
कि शिल्पा एक बार फिर चीख उठी–
रोहित तुम्हारे पीछे! वही... गुरिल्ला गुर्रा रहा होगा! सब आ रहे हैं रोहित! तुम भी भाग जाओ! मुझे छोड़... छोड़ दो!
तेरी जान बचाने के लिए
मैं रस्सी की डोरी को टूटने नहीं दूंगा! नहीं टूटने दूंगा!
गुरिल्ला पास आता जा रहा था, और रोहित पागलों की तरह अपने कपड़े फाड़ता जा रहा था–
चिंघाऽऽऽऽ
और उसके हाथ बिजली की तरह उन चीथड़ों में गांठें बांधते जा रहे थे
न... मैं तैरकर निकल आऊंगी!

और फिर- चीथड़ों की बनी वह रस्सी, शिल्पा की तरफ उछल गई-
इसे पकड़ शिल्पा! मैं तुझे खींचता हूं!
और गुरिल्ले के पास आने तक रोहित ने शिल्पा को पानी से तो निकाल लिया था-
पर तब तक समय भी निकल गया था-
रोहित! यह तो एकदम पास आ गया है! हम भाग भी नहीं सकते! अब क्या करें?
रोहित और शिल्पा को कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ी। क्योंकि तभी-
मेरे बच्चों से दूर हट, शैतान!
इस वार ने गुरिल्ले का ध्यान बच्चों पर से हटाकर-
बच्चों के पापा पर ला खींचा-
और गुरिल्ले की एक सांस से पिताजी पर एक खतरनाक असर नजर आने लगा-
रोहित, पापा को क्या हो रहा है?
इसकी सांस जहरीली लगती है शिल्पा! मुझे पापा को इसके चंगुल से छुड़ाना होगा!
कुछ ही पलों बाद रोहित, गुरिल्ले की गर्दन पर चढ़ा हुआ था-
हम लोग इस दैत्य से जीत नहीं पाएंगे!
इस दैत्य से अगर कोई निपट सकता है तो सिर्फ... नागराज!
नागराज! नागराज!

हवा में ध्वनि तरंगें फैलते ही महानगर में जगह-जगह फैले नागराज के जासूस सर्पों में से एक सर्प, उन तरंगों को महसूस करने लगा-
फन, जंगले से टकराने लगा-
और उसमें से नागलिक संकेत निकल कर...
--एक सर्प से दूसरे सर्प तक पहुंचते हुए--
महानगर में एक तरफ बढ़ने लगे-
इधर चिल्ड्रेंस पार्क में बुरी तरह से उत्तेजित हो चुके गुरिल्ले ने रोहित को उसकी मौत की तरफ उछाल दिया था-
आऽऽऽह!
परन्तु मौत और रोहित के बीच में जीवन की डोर आ खिंची-
महानगर के साथ-साथ पूरी दुनिया में फैली यह कहावत गलत नहीं थी कि 'मौत और नागराज' के बीच की दौड़ में जीत हमेशा नागराज की ही होती है-
मैं बिल्कुल सही समय पर यहां पहुंचा हूं। पर यह गुरिल्ला इस पार्क में कैसे आ गया? अपने आप या किसी ने जान-बूझकर इसको यहां पर फेंका है? और ये है कहां का? सर्कस का, चिड़ियाघर का या जंगल का।
धड़ाक

खैर, जो भी हो, फिलहाल तो मुझे इसको जल्दी से जल्दी अपने शिकंजे में कस लेना है।
मेरी सर्प रस्सी के शिकंजे इसको पकड़ने के लिए पर्याप्त रहेंगे!
वरना यह जो बरबादी फैलाएगा उसका अन्दाजा लगाना भी मुश्किल है!
नागराज ने मुसीबत को मामूली समझा था, और यह उसकी भूल थी-
क्योंकि नागरस्सी ने गुरिल्ले को जकड़ा तो जरूर, पर जकड़े रख पाने में असफल हो गई-
और नागराज के शरीर पर दो मोटी मजबूत और बालों से भरी बांहें आ कसीं-
गर्रर्रर्र र्रर्रर्र
आऽऽऽ ह! मेरा... दम घुट रहा है। पसलियां कड़क रही हैं। शिकंजा आश्चर्यजनक रूप से मजबूत है...
—मुझे इस पर विष फुंकार का प्रयोग करके इसको बेहोश करना होगा!
नागराज ने विष फुंकार का प्रयोग तो अवश्य किया, पर गुरिल्ले को चकित करने के बजाय-
उसे खुद चकित हो जाना पड़ा-
ओ! विष फुंकार बेअसर रही! एक गुरिल्ले पर? यह कैसे हो सकता है! असंभव! जरूर कुछ और ही है, इतना सीधा-सादा नहीं जितना कि मैं समझ रहा हूं!

इसलिए अब मैं इस पर ऐसा भीषण वार करूंगा कि इसकी हड्डियों में दरारें पड़ जाएं!
आआह!
...आआह! अब कुछ चैन पड़ा! थोड़ा विष पानी ने धो दिया, और थोड़ा मेरा शरीर इसका आदी हो गया है। अब यह विष मुझे नुकसान नहीं पहुंचा रहा है!

...न यह विष सामान्य जानवरों को नुकसान पहुंचा सकता है! अरे! यह गुरिल्ला मेरे पीछे झील में नहीं आ रहा है!...
...ओह! मैं तो भूल ही गया था कि गुरिल्ले पानी से डरते हैं, क्योंकि ये अच्छे तैराक नहीं होते हैं!
यह तो इसे पकड़ने का बहुत आसान सा तरीका मिल गया...
नागरस्सी के एक ही झटके से गुरिल्ला, झील में आ गिरा–
गुरिल्ला छटपटाया और डर तथा दम घुटने से बेहोश हो गया, परन्तु नागराज ने उसे डूबने नहीं दिया –
चलो! यह मुसीबत तो टली! अब सिर्फ यह पता करना है कि ठेका मैं...
...आया था ऽऽऽऽऽ ह!
नागराज को अपने सवालों का जवाब जल्दी ही मिल जाना था–

क्योंकि इसे एक नहीं, बल्कि कई 'कलू' मिल गए थे-
हे देव कालजयी, मैं ने सिर्फ गुरिल्ले को हराकर समझ रहा था कि मुसीबत टल गई है पर यहां तो पूरा जंगल ही जमा हो गया है.. और मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि ये सबके सब गुरिल्ले की तरह ही ज़हरीले होंगे
मुझे बहुत जल्दी कोई ऐसा रास्ता सोचना होगा, जो इन सबको एक साथ निबटा सके. वरना अगर एक-एक से लड़ना पड़ा तो ज़हर मेरे चीथड़े अवश्य कर देगा.

लेकिन तीन तरफ से घिरे नागराज को सोचने का मौका नहीं मिला-
हाथी मुझे उछाल उछालकर मारना चाहता है, और गैंडा मुझे कुचलकर और इन दोनों से एक साथ निपटने का तरीका मुझे समझ में आ रहा है
अगले ही पल नागराज उछलकर गैंडे की पीठ पर सवार हो गया था-
और अब गैंडे को नागराज पीठ से हिला रहा था, जैसे एक कड़ाही के ढक्कन से
और जैसे हाथी नागराज को रौंदने के लिए आगे बढ़ता जा रहा था, वैसे ही गैंडा नागराज को कुचलने के लिए आगे लपकता जा रहा था-
मुझे इसकी जहरीली सांस से बचे रहना होगा
की कोई खतरा नहीं है!

सीधे मस्ताने हाथी की तरफ ले आ रहा था-
और जैसे ही इस भीषण टक्कर का आखिरी पल आया...

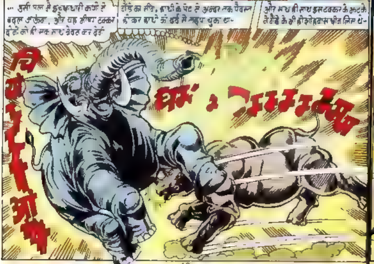

और साथ ही साथ इस टक्कर के झटके से

सबसे ज्यादा खतरनाक है.
ओऽऽह
मेरी अधिकतर शक्तियां तो इन पर बेकार सिद्ध होंगी सिर्फ शारीरिक शक्ति काम कर सकती.
ओह, आइडिया आ गया, अब मैं वही तरीका इस्तेमाल करूंगा, जो शिकारी इस्तेमाल करते हैं.
वैसे तो मेरे इच्छाधारी सर्प एक पल में इस शेर का पेट फाड़ सकते हैं, पर मैं इस खूबसूरत जीव को खत्म नहीं चाहता.
परन्तु अब इसे नुकसान न पहुंचाऊं तो पकड़ूं कैसे?
नागराज की कलाइयों से सैकड़ों सर्प टपककर एक दिशा में जाने लगे-
अचानक ही नागराज एक तरफ लपका पर ज्यादा दूर नहीं जा पाया
और नागराज शेर का ध्यान बंटाने में व्यस्त हो गया-
पर यह काम उसे कुछ मिनटों तक ही करना था, क्योंकि उन कुछ मिनटों के बाद-
अब बस मुझे इस शेर को खींचकर उस तरफ ले जाना है, जिधर मेरे सांपों ने फंदे को तैयार कर रखा है.
और उसी पल शेर ने उस पर वह घातक छलांग लगा दी-

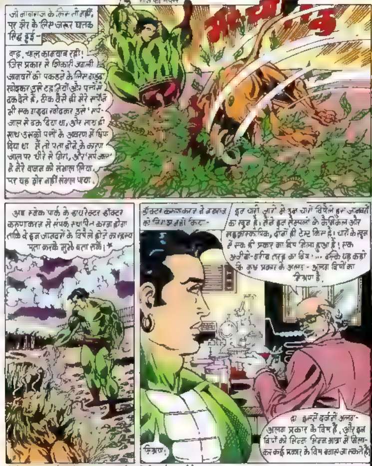
जो नागराज के लिए तो नहीं, पर शेर के लिए जरूर घातक सिद्ध हुई -
वाह, चाल कामयाब रही! जिस प्रकार से शिकारी जंगली जानवरों को पकड़ने के लिए गड्ढा खोदकर उसे टहनियों और पत्तों से ढक देते हैं, ठीक वैसे ही मेरे सर्पों ने भी एक गड्ढा खोदकर उसे 'सर्प-जाल' से ढक दिया था, और साथ ही साथ उसको पत्तों के आवरण में छिपा दिया था, मैं तो पता होने के कारण जाल पर धीरे से गिरा, और 'सर्प जाल' ने मेरे वजन को संभाल लिया, पर यह शेर नहीं संभल पाया.
अब स्नेक पार्क के डायरेक्टर डॉक्टर करुणाकरन से संपर्क स्थापित करना होगा ताकि वे इन जानवरों के विषैले होने का रहस्य पता करके मुझे बता सकें। ★
डॉक्टर करुणाकरन ने नागराज को निराश नहीं किया -
इन चारों जारों में इन चारों विषैले हुए जानवरों का खून है। मैंने इन सेम्पलों के केमिकल और माइक्रोस्कोपिक, दोनों ही टेस्ट किए हैं। चारों के खून में एक ही प्रकार का विष मिला हुआ है! एक अजीबो-गरीब तरह का विष ... बल्कि यह कहो कि कुछ प्रकार के अलग - अलग विषों का मिश्रण है.
मिश्रण!
हाँ, इनमें दर्जनों अलग-अलग प्रकार के विष हैं, और इन विषों को भिन्न-भिन्न मात्रा में मिलाकर कई प्रकार के विष बनाए जा सकते हैं!

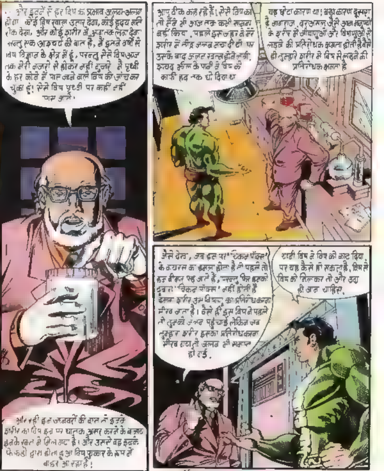
...और इनमें से हर विष का प्रभाव अलग-अलग होगा, कोई विष खाल उतार देगा, कोई हृदय गति रोक देगा, और कोई शरीर में आग तक लगा देगा परन्तु एक आश्चर्य की बात है, मैं इतने वर्षों से विष विज्ञान के क्षेत्र में हूं, परन्तु ऐसे विष आज तक मेरी नज़रों से होकर नहीं गुज़रे। मैं पृथ्वी के हर कोने में पाए जाने वाले विष की जांच कर चुका हूं! ऐसे विष पृथ्वी पर कहीं नहीं पाए जाते।
और यही इन जानवरों की बात तो इनके शरीर का विष इन पर घातक असर करने के बजाए इनके रक्त में मिल गया है। और उससे वह इनके फेफड़ों द्वारा होता हुआ विष फुंकार के रूप में बाहर आ रहा है!
आप ठीक कह रहे हैं! ऐसे विष का तो मैंने भी आज तक कभी सामना नहीं किया, पहले इस जहर ने मेरे शरीर में तीव्र जलन मचा दी थी पर उसके बाद जलन खत्म होने लगी, शायद झील के पानी ने विष को काफी हद तक धो दिया था
यह छोटा कारण था; बड़ा कारण दूसरा है नागराज, दरअसल जैसे आम मनुष्यों के शरीर में जीवाणुओं और विषाणुओं से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता होती है वैसे ही तुम्हारे शरीर में विष से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता है
जैसे देखो, जब हम पर 'चिकन पॉक्स' के वायरस का हमला होता है तो पहले तो हम बीमार पड़ जाते हैं, परन्तु फिर हमको दुबारा 'चिकन पॉक्स' नहीं होती है क्योंकि शरीर उस वायरस का प्रतिरोध करना सीख जाता है। वैसे ही इस विष ने पहले तो तुमको जलन पहुंचाई लेकिन जब तुम्हारा शरीर इसका प्रतिरोध करना सीख गया तो जलन भी समाप्त हो गई।
यानी विष ने विष को काट दिया, पर यह कैसे हो सकता है, विष ने विष को मिलकर तो और उग्र हो जाना चाहिए।

आप ठीक कहते हैं, पर पहले मुझे
और उनको ढूंढना ज्यादा मुश्किल काम नहीं होना चाहिए.
यह एक ऐसा खजाना है, जो तुमको उठाना ही पड़ेगा
अपने ही विष से बर्फ काट लेकर नागराज वहां से चला गया

इस वक्त मुझे जानकारी चाहिए। और जानकारी पाने का सबसे अच्छा स्थान है...
भारती कम्युनिकेशंस!
ओह नागराज! आज राज के बजाय तुम आ गए! जरूर कोई खास बात है! क्या गड़बड़ हो गई है?
नागराज ने भारती को सारा विवरण सुनाना चालू किया-
ओह, मतलब ये देखो नागराज! इस वक्त महानगर में सिर्फ एक सर्कस लगा है और वह चिल्ड्रेन्स पार्क में कम से कम पचास किलोमीटर दूर है, वहां सब ठीक-ठाक है:
महानगर जू से किसी भी जानवर के भागने की खबर नहीं आई है। और महानगर से पचास किलोमीटर के दायरे में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां से ये जानवर आ सकें
पचास किलोमीटर के बाहर के दायरे के बारे में क्या ख्याल है भारती? यह क्या है? ग्रीन बेल्ट?
ये... ओ... ये सुभाष नेशनल पार्क है। वहीं जहां पर जानवरों को जंगल सा माहौल देकर प्राकृतिक तरीके से बढ़ने को छोड़ दिया जाता है।

...पर मुझे पूरा यकीन है कि ये जानवर नेशनल पार्क से ही आए हैं। अगर ये कहीं ... उसका जरूर कोई कारण होगा वैसे ये ... कि नेशनल पार्क और महानगर के बीच में और कोई आबादी वाला क्षेत्र नहीं है। अगर जानवर नेशनल पार्क से महानगर की दिशा में भागते तो सीधे उसी पार्क में आते जहां पर वे आए हैं। वह पार्क महानगर की सीमा पर स्थित है।
मुझे बस एक ही चिन्ता है,
क्योंकि उसका ख्याल भी सही था, और वह ... स्थान पर ही जा रहा था—
नागराज को महानगर की चिंता छोड़कर अपनी चिंता करनी चाहिए थी-

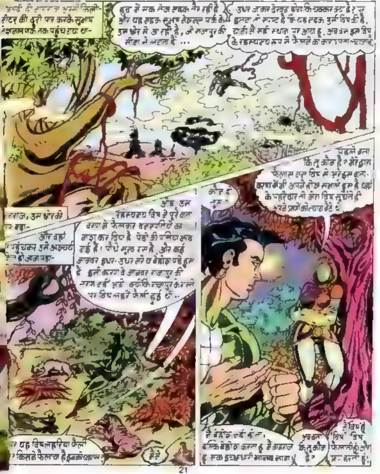

हीटर की दूरी पार करके सुभाष
दूर से एक तेज महक आ रही है और यह महक ... उस ओर से आ रही है, जो ... की सीमा से लगता है ...
पहले बता कि तू कौन है ? मेरे द्वारा फैलाए गए विष से ... अपने होश संभाले हुए है ...
और वहाँ पहुँचकर उसे आश्चर्य ... हो जाना पड़ा-
और उस रहस्यमय विष ने पूरे वन ... को फैलकर वनस्पतियों का नाश कर दिया है। पेड़ों की पत्तियाँ ... गई हैं। पौधे मुरझा गए हैं, और कई जानवर इधर-उधर मरे व बेहोश पड़े हुए हैं ...
यह विषलहरियाँ फैली ... किसने फैलाया है ...
मैंने
अच्छा किंतु कौन है ?
मैं विष हूँ 'विष' विष फैलाती हूँ और ...

मुझे जीवित चीज़ों से सख्त नफरत है। इधर-उधर हिलती-डुलती रहती हैं। मेरा ध्यान भंग करती हैं। इसीलिए हर जीवित वस्तु या प्राणी को नष्ट कर देती हूं।
और मैं ऐसा करने की सोचने वालों को ही हिलने-डुलने से लाचार कर देता हूं। जीवन ईश्वर की देन है, उसे मिटाने वाली तू कौन होती है?
आऽऽह, तू तो बड़ा विषैला है रे! मेरे सर तक को चकरा दिया। विष के सर को कहता है ऐसा विष तो मुझे ब्रह्मांड के किसी कोने में नहीं मिला है।
मेरा दिल तेरे विष पर आ गया है, नागराज। अपना सारा विष मुझे दे दे। मैं इसका प्रयोग किसी और ग्रह पर जाकर करूंगी।
मेरा शरीर कोई दुकान नहीं है, 'विष', और न ही मेरे रूप उस दुकान पर बिकने वाली चीज़ हैं। मेरा विष प्रकृति के कल्याण के लिए प्रयुक्त होता है, उसके विनाश के लिए नहीं...
...हां! जो प्रकृति के विरुद्ध पर उतर आते हैं। यह उनका विनाश अवश्य कर देता है।
ओऽऽह, मेरे शरीर में तेज जलन हो रही है। झुलस रहा है मेरा शरीर।
नागराज की विष फुंकार ने 'विष' पर वही असर किया जो 'विष' के जहर ने नागराज पर किया।

विष के रक्त 'विष विस्फोट' ने नागराज के शरीर को लपटों में घिरवा दिया–

अब तू जलेगा नागराज, अकेला और मेरे जलने से जो धुआं उठेगा, उसमें मेरे विष के कण भी शामिल होंगे और उन कणों को ग्रहण करके मैं मेरा विष अपने शरीर में सोख लूंगी
आह! इन 'विष लपटों' की बुझाने का कोई तरीका समझ में नहीं आ रहा है
...और इस जलते शरीर से जो भी सर्प बाहर आने की चेष्टा करेगा, वह खुद भी जल जायेगा
इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके देखता हूं! शायद इससे यह लपटें मेरा पीछा छोड़ दें
लेकिन इच्छाधारी कण में भी लपटें नागराज को लपेटे रहीं-
और नागराज के धुएं में बदल कर बे...
और वह
आखिर

कड़ियों की आड़ में लपक गया-
'विष' बात को बढ़ा चढ़ाकर नहीं कह रही थी!
ठीक है

.. मेरी केंचुली है जैसे ही मुझे ख्याल आया कि मेरी खाल झुलस रही है, तभी मुझे यह भी ख्याल आया कि मैं खाल उतार सकता हूं, असली केंचुली के रूप में तुम्हारी विष अग्नि अभी मेरे शरीर के अन्दर तक नहीं पहुंची थी, इसलिए मैंने अपनी झुलसी खाल को उतार दिया और आजाद हो गया
तेरी शक्तियों को मैंने कम करके आंका था, पर अब मैं सीधे तेरा खून ही निचोड़ूंगी, बस एक बार इन कंटेदार सर्पों से आजाद हो जाऊं।
इनसे तू कभी आजाद नहीं हो सकती विष, ये वे मामूली सांप नहीं हैं जो तेरे विष से गल जाएं।
मेरे पास विषों के सैकड़ों मिश्रण हैं, नागराज, किसी न किसी मिश्रण से तो ये गलेंगे ही गलेंगे!
.. मेरे सर्प तेरे पैरों के नीचे एक गड्ढा खोद चुके हैं, एक बार तू जमीन में दब जाए, फिर देखते हैं कि तू अपने विष मिश्रणों का प्रयोग कैसे करती है।
आ... ह, इन कैद से मैं अभी आजाद.. अरे!...
.. धरती मेरे पैरों तले से खिसक रही है, मेरे पैर जमीन में धंसते जा रहे हैं, ये सांप मुझे अन्दर जमीन में ले जा रहे हैं। नागराज, मुझे छोड़ दे नागराज, जाने दे मुझे, जाने दे।
इन गड्ढों से मैं तुझे निकलने नहीं दूंगा, विष
कहीं नहीं, विष मैंने इसे छोड़ा नहीं, बल्कि जमीन में तब तक गाड़े रखूंगा जब तक ये बेहोश नहीं हो जाती
यह अचानक तुम्हें क्या हो गया? और इसके विष का असर समाप्त कैसे होने लगा? कुछ गड़बड़ लगती है?
नागराज ने गड्ढे का मुंह बन्द करना शुरू कर दिया

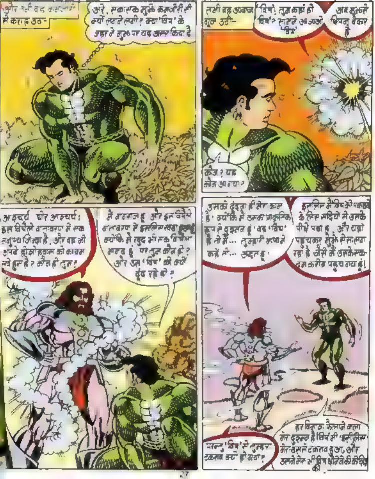
और तभी वह कमजोरी से कराह उठा-
अरे, एकाएक मुझे कमजोरी सी क्यों लगने लगी? क्या 'विष' के जहर ने मुझ पर यह असर किया है
तभी वह आवाज गूंज उठी-
'विष'! तुम कहां हो विष? सामने आ जाओ 'विष'
अब मुझसे छिपना बेकार है
कौन? यह कौन आ गया?
आश्चर्य घोर आश्चर्य! इस विषैले वातावरण में एक मनुष्य जिन्दा है, और वह भी अपने होशोहवास को कायम रखे हुए है? कौन हो तुम?
मैं अमृत हूं और इस विषैले वातावरण में इसलिए खड़ा हूं क्योंकि मैं खुद भी एक विषैला अमृत हूं पर तुम कौन हो? और उस 'विष' को क्यों ढूंढ रहे हो?
उसको ढूंढना ही मेरा कर्म है, क्योंकि मैं उसका प्राकृतिक रूप से दुश्मन हूं। वह 'विष' है तो मैं... तुम्हारी भाषा में कहें तो... अमृत हूं।
इसलिए मैं विष को पकड़ने के लिए सदियों से उसके पीछे पड़ा हूं, और यहां पहुंचकर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं उसके एकदम करीब पहुंच गया हूं!
परन्तु 'विष' से तुम्हारा टकराव क्यों हो गया?
हर विनाश फैलाने वाला मेरा दुश्मन है। विष भी 'इविलिस्ट' है। मेरा उससे टकराव हुआ, और उसने मेरा भी विष छीनने की कोशिश की

तुम्हारा विष चुराने की कोशिश की? यानी अतिरिक्त विष प्राप्त करने की चेष्टा की , पर ये तो नियमों के खिलाफ है .
नियम ? कैसे नियम? तुम किन नियमों की बात कर रहे हो ?
मेरा तात्पर्य है कि विष जैसे विनाशकों के भी कुछ नियम होते हैं
खैर, जल्दी बताओ कि विष कहां है ? उसका वह अर्थ कैसा विनाश जैसा है !
अब वह कभी विनाश नहीं फैला पायेगी, अमृत , क्योंकि मैंने उसकी यहीं पर कब्र बना दी है .
कब्र ? कब्र क्या ? अच्छा, जमीन में दबी है; खोदो , जल्दी खोदो दिखाओ मुझे उसकी
नागराज के सर्पों ने जमीन को फिर से खोदना शुरू कर दिया—
और गड्ढे के फिर से खुलते ही नागराज और अमृत दोनों ही चकित रह गए—
अरे ! यहां पर तो गड्ढे के बजाय सुरंग बनी हुई है
मैं जानता था यह जमीन केवल विष को रखने नहीं रख सकती , वह अपने चिह्न से जमीन को काटकर सुरंग बनाती हुई यहां से दूर जा चुकी है .
चौबीस घंटों के अन्दर ! ऐसी समय सीमा क्यों है अमृत ?
बस, तुम यह समझ लो कि अगर पृथ्वी को विष के विनाश से बचाना चाहते हो तो विष को ढूंढने में मेरी मदद करो

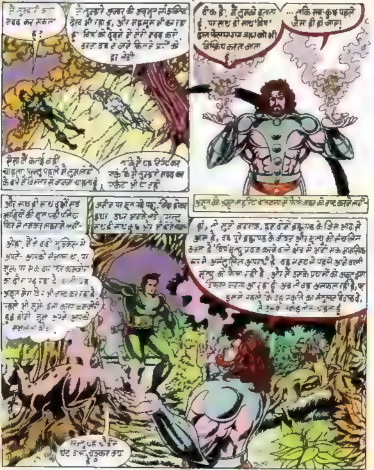
ऐसा मैं कतई नहीं चाहता, परन्तु पहले मैं तुम लोगों के बारे में विस्तार से जानना चाहता हूं।
...ताकि सब-कुछ पहले जैसा ही हो जाए!

तुम चुप क्यों हो ... जल्दी बोलो! मदद करोगे या नहीं?
बहुत कम है.

अ...ह.
अब तू मेरा नागराज, पिलपिल-पिलपिल कर मरेगा। तूने क्या समझा? अगर तू मेरी मदद नहीं करेगा तो मेरी मदद करने वाला कोई बचेगा ही नहीं! अरे, अमृत ने मुर्दों तक में जान डाल दी है, ...और यहां पर तो मेरा काम करने के लिए कई जीवित जन्तु उपलब्ध हैं.
...जैसे ये वृक्ष; मेरा अमृत पीकर इसमें अतिरिक्त 'जीवन शक्ति' भर जायेगी और फिर इसकी जड़ें ढूंढेंगी विष को, चाहे 'विष' यहां से दो कदम दूर हो या दो हजार योजन.
पेड़ की जड़ें आश्चर्यजनक रूप से बढ़ कर विष की दिशा में ऐसे लपकीं जैसे कुत्ता गंध सूंघकर अपराधी को कई दिन बाद भी ढूंढ निकालता है-
और साथ ही साथ अमृत भी चल दिया है वह चाल-
आराम से मरने के लिए छोड़कर-
आ...ह! मेरा विष तेजी से नष्ट हो रहा है, और इस 'अमृत' से बचने का मेरे पास कोई उपाय नहीं है! अब मैं यहीं पर दम तोड़ दूंगा, और उधर 'विष और अमृत' के टकराव में न जाने कितनी तबाही फैलेगी, और न जाने कितनी जानें जायेंगी...
...पर मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा, जब मैं अपने-आपको ही नहीं बचा पा रहा हूं, तो दूसरों को क्या बचाऊंगा; दूसरे विष को तो मैं अपने विष से काटने का प्रयास कर सकता हूं
क्योंकि लोहे को लोहा ही काटता है, पर अमृत को कैसे... अरे.

लोहा, लोहे को काटता है! विष को विष के दूसरे रूप से काटा जा सकता है तो अमृत यानी विष के काट को भी, विष के काट से काटा जा सकता है. और वह काट मेरे पास है उस एंटी-वेनम के रूप में, जो डॉक्टर करुणाकरन ने मुझे दी थी ..
... पर इसका असर उल्टा भी हो सकता है. हो सकता है कि जैसे कहीं-कहीं विष, विष से मिलकर और ज्यादा उग्र हो उठता है, वैसे ही कहीं मेरे विष की काट मेरे शरीर में बह रहे अमृत के असर को और तेज करके मेरी मौत को और शीघ्र न बुला ले ...
... पर और कोई रास्ता नहीं है. मौत धीरे आए या तेज, आनी तो है ही; बच सकने का सिर्फ यही एक रास्ता है. बस अब देव कालजयी से यही प्रार्थना है कि मेरे विष की काट अमृत के असर को नष्ट कर सके.
नागराज एक सांस में पूरा एंटीवेनम पी गया—
और उसके सारे शरीर की हरकतें धीरे-धीरे बन्द होने लगीं. सांसें भारी हो उठीं, हाथ-पैर शिथिल हो गए, आँखें अपने-आप मुंदने लगीं और दिल की धड़कन अपना दम तोड़ने लगी—
शायद 'एंटीवेनम' अपना वही असर दिखा रहा था, जिसका नागराज को डर था. मौत के आने की गति और तेज हो गई थी—

को शिकार करने के लिए पूरा जंगल
मिल गया था—
महानगर का इमारती जंगल
आहा! यहां पर मुझे विनाश फैलाने के लिए बहुत सारी चीजें मिलेंगी! वाह वाह विनाश ही विनाश
लोग भागे, कुछ भागे, कुछ मुसीबत से गुजर गए, और कुछ दुनिया से ही गुजर गए—
का रूप और उसके प्रकट होने का तरीका लोगों को भयभीत कर देने के लिए काफी था
पर बचने का तरीका कहां
क्या मुसीबत आ गई
पार्क के डायरेक्टर
कहां कलाकार भी भारती चैनेल द्वारा ऊंची इमारतों पर स्थित कैमरों से इस हादसे का सीधा प्रसारण देख रहे थे
हां, भारती, मैं भी इस हादसे को देख रहा हूं... पर नागराज अभी तक कहीं नजर नहीं आ रहा है! वह जहरीले जानवरों की तलाश में सुभाष नेशनल पार्क गया था? अच्छा ठीक है भारती, मैं कुछ करता हूं!...

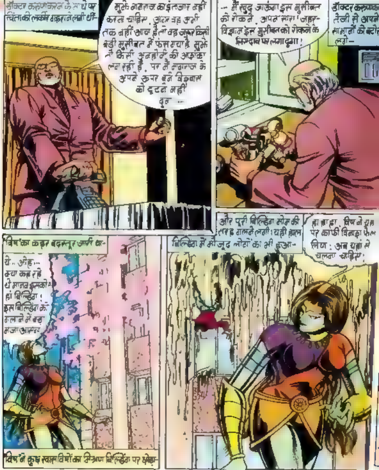
डॉक्टर कल्याणकरन के माथे पर चिंता की लकीरें गहराने लगी थीं-
मुझे नागराज का इंतजार नहीं करना चाहिए. अगर वह अभी तक नहीं आया है तो वह जरूर किसी बड़ी मुसीबत में फंस गया है. मुझे तो किसी अनहोनी की आशंका लग रही है. पर मैं नागराज के अपने ऊपर बने विश्वास को टूटने नहीं दूंगा...
-- मैं खुद जाऊंगा इस मुसीबत को रोकने. अपना सारा 'जहर-विज्ञान' इस मुसीबत को रोकने के सिलसिले पर लगा दूंगा!
डॉक्टर कल्याणक तेजी से अपने सामानों को बटो लगे-
विष का कहर बदस्तूर जारी था-
ये.. ओह... क्या कह रहे थे मानव इसको? हां बिल्डिंग! इस बिल्डिंग को गलाने में बड़ा मजा आएगा
विष ने कुछ खास विषों का मिश्रण बिल्डिंग पर फेंका-
और पूरी बिल्डिंग मोम की तरह गलने लगी! यही हाल बिल्डिंग में मौजूद लोगों का भी हुआ-
हा हा हा. विष ने इन पर काफी विनाश फैला लिया! अब यहां से चलना चाहिए!

क्योंकि अब अमृत को यहां पर आने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा, इस वक्त मैं उसके सामने गई तो मुझे मात खानी पड़ेगी, इस... कया नाग... विल्लिंग को बुलाने में मेरा काफी जहर खर्च हो चुका है! अब चलकर जरा सा आराम किया जाए, ताकि मैं तरोताजा भी हो जाऊं, और मेरे खत्म हुए कुछ विष फिर से मेरे शरीर में पैदा हो जाएं!
अगर तू सच कह रही है, तब तो मैं एकदम ठीक समय पर यहां आया हूं...
कौन?
...कलपाकरन! और मैं तेरे लिए तैयारी करके आया हूं, अगर तूने ही उन जानवरों के अंदर जहर भरा होगा, और इससे मुझे यह पता चल चुका है कि तू जहरों का मिश्रण घोलती है.
इसीलिए मैं यह 'वेनम एनालाइजर' लेकर आया हूं! यह तेरी विष फुहार का तुरन्त विश्लेषण करके उसके लिए जहर की काटों का मिश्रण बना देगा, पर यह बाद की बात है, पहले तो मैं तुझे विष मिश्रण घोलने का मौका ही नहीं दूंगा.
आऽऽऽह! इस विष काट ने तो मेरे बचे-खुचे विष को भी नष्ट करना शुरू कर दिया है और बगैर विष के तो मेरा अस्तित्व ही नहीं रहेगा. कुछ करना होगा, वरना या तो मैं पहले मर जाऊंगी या अमृत आकर मेरा खेल खत्म कर देगा!
आऽऽऽह!
हे भुजंगदेव, ये किस ग्रह पर मरने के लिए आ गई मैं?

तू मुझे जरूरत से ज्यादा कमजोर समझ रहा है कल्पणकरन; मेरे पास अभी भी इतना विष है कि तुझे गलाकर पानी बना दूं.
तुमकी ओर मत बढ़ो अपनी विष'तेरे मुंह या शरीर से विष की फुहार निकलते ही मेरा 'पेइन एनलाइजर' उस मिश्रण के घोलों का विश्लेषण करके ...
--और अपने आप उस विष मिश्रण का 'एंटीवेनम मिश्रण' बनाकर तेरे विष की काट देगा.
ओह, यह मानव तो मुझ पर भारी पड़ने लगा है.
अगर मेरे शरीर में जल्दी ही विषों की उत्पत्ति न हुई तो इसी राह पर ही मेरी समाधि बन जाएगी.
लेकिन विष तो धीरे धीरे ही बने ... ओह
कुछ देर तक विष की अंदरी चमक उठे
कुछ ही पलों बाद विषपिंडल रही बिल्डिंग में से अपना विष वापस चूस रही थी--
पहली बार मेरे ही विष से बनी वस्तु ने मेरी जान को बचाया है. अब मेरे शरीर में विषों की मात्रा बढ़ रही है;
?
अब तेरी मौत करीब आ रही है मानव. अब मैं इतनी तेजी से अलग-अलग विष मिश्रणों को बनाकर फेकूंगी कि तेरा 'एनलाइ-जर' भ्रमित हो जाएगा!

करुणाकरन ने इस स्थिति की कल्पना नहीं की थी—
ओह! यह तो सचमुच इतनी तेजी से अलग-अलग मिश्रणों को छोड़ रही है कि मेरे 'स्टेबलाइजर' पर उसे विश्लेषित करने में काफी जोर पड़ रहा है!
इसके कंप्यूटराइज्ड सर्किटों में शॉर्ट-सर्किट हो रहा है...
...और अब यही हाल तेरा होगा सनकी।
घातक विषों का मिश्रण करुणाकरन को जलाने के लिए आगे लपक पड़ा—
लेकिन उसको किसी और ने अपने शरीर पर झेल लिया—
नागराज, तुम आ गए? मैं तो समझ रहा था कि तुम...तुम...
जो कहते आपकी जबान लड़खड़ा रही है, वैसा ही होने वाला था डॉक्टर। मैं तो मौत की कगार पर पहुंच ही चुका था, पर आपके द्वारा दिए गए सर्टिफिकेट ने मेरी जान बचा ली!
'विष' के जहर को काट दिया।
'विष' के जहर को नहीं, बल्कि अमृत के जहर की काट को!

अमृत धारी- धारी तू अमृत से भी टकरा चुका है! और उससे टकराकर भी बच गया? पर कैसे? अमृत के पास तो हर विष की काट है। जीवनदायी शक्तियाँ हैं उसके पास. तू उससे कैसे बच गया? तेरा जहर तो खत्म हो जाना चाहिए था! और तुझे एक आम मानव बन जाना चाहिए था.
और अगर ऐसा हो जाता तो तू मेरे विष वारों से कभी बच नहीं पाता.
अमृत? यह अमृत कौन है?
इसको पकड़ने आने का दावा करने वाला एक परग्रही। ये दोनों परग्रही हैं। किसी दूसरे ग्रह से आए हैं! अमृत ने मुझसे सहयोग मांगा था। पर उसके इरादे स्पष्ट न होने के कारण मैंने इंकार कर दिया तब उसने अमृत की विषकाट का प्रयोग करके मेरा विष खत्म करने और मुझे मारने की कोशिश की!
बचने का और कोई रास्ता न पाकर मैं आपके द्वारा दिया गया 'एंटीवेनम' पी गया पहले तो मेरे शरीर में जीवन के सभी संकेत शिथिल होने लगे!
पर न जाने कैसे आपके 'अमृत' ने उस अमृत के असर को काट दिया! मैं बच गया.
मैं समझ गया नागराज. जैसे इस विष के जहर के खिलाफ तुम्हारे शरीर ने प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली थी, वैसे ही उस 'एंटीवेनम' ने अमृत की 'विषकाट' को रोकने के लिए तुम्हारे शरीर में दूसरी प्रतिरोधक क्षमता पैदा करने में मदद की है। अब शायद अमृत की विषकाट तुम पर असर करेगी भी नहीं!
ऐसा क्यों डॉक्टर करुणाकरन?
देखो, जैसे हमको जीवन में एक बार ही 'चिकन पॉक्स' होता है फिर हमारा शरीर हमेशा के लिए उसके खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेता है। वैसा ही इस अमृत के विष के साथ भी होना चाहिए!
यह तो गड़बड़ पर गड़बड़ हुई जा रही है पहले किसी ग्रह पर काम करने में दिक्कत नहीं आई थी.
लेकिन यहां पर तो ये नाग मानव बार-बार अड़चन डाल रहा है! मेरे विष को भी पचा जा रहा है। और अमृत के अमृत को भी.
खैर अब मैं संभल गई तो यहां से फटाफट निकल लेना चाहिए!

वरना कहीं अमृत मुझे ढूढता-ढूढता यहां आ गया तो सब गड़बड़ हो ऽऽऽऽ यह क्या ?
जमीन में से पेड़ की जड़ें निकलकर मुझे शिकंजे में कस रही हैं, और इनके शिकंजा कसने ही मेरे विष नष्ट होने शुरू हो रहे हैं.
इसका एक ही अर्थ हो सकता है! और वह ये कि ये जड़ें, अमृत द्वारा भेजी गई हैं और अब वह भी इनके पीछे पीछे यहां आता ही होगा. मुझे इनसे आजाद होना होगा, होना ही होगा.
पर कैसे ? कैसे ? कैसे ?
ये जड़ें तो सचमुच अमृत ने ही भेजी थीं. यानी अब अमृत और विष का टकराव होने ही वाला है. देखते हैं अब क्या होना है !

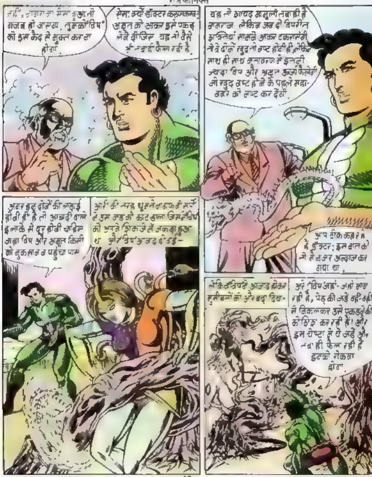

नहीं, महाराज! ऐसा हुआ तो गजब हो जाएगा, तुमको "विष" को इस कैद से मुक्त करना होगा.
ऐसा क्यों डॉक्टर कश्मकश? अमृत को अकेले इसे पकड़ लेने दीजिए. यह तो वैसे भी तबाही फैला रही है.
यह तो शायद मामूली तबाही है महाराज. लेकिन जब दो विपरीत शक्तियां सामने आकर टकराएंगी तो वे दोनों खुद तो नष्ट होंगी ही, लेकिन साथ ही साथ वातावरण में इतनी ज्यादा विष और अमृत ऊर्जा फैलेगी जो खुद नष्ट होने के पहले महानगर को नष्ट कर देगी.
आप ठीक कहते हैं डॉक्टर; इस बात को तो मैं नजरअंदाज कर गया था.
अगर इन दोनों की लड़ाई होनी ही है तो आबादी वाले इलाके से दूर होनी चाहिए जहां विष और अमृत किसी को नुकसान न पहुंचा पाएं
आरी की तरह घूमते नागराज के सर्पों ने उस जड़ को काट डाला जिसने विष को अपने शिकंजे में जकड़ा हुआ था और विष आजाद हो गई—
लेकिन विष ने आजाद होकर मुश्किलों को और बढ़ा दिया.
अरे! "विष जहां" जहां जा रही है, पेड़ की जड़ें वहीं-वहीं से निकलकर उसे पकड़ने की कोशिश कर रही हैं। और इस चेष्टा में ये जड़ें और भी फैल रही हैं इनको रोकना होगा.

सर्प सेना ने जड़ के एक तंतु के पास से जमीन को खोदना शुरू कर दिया-
और कुछ ही पलों बाद नागराज मुख्य जड़ के पास पहुंच चुका था-
नागराज की तीव्र फुंकार ने जड़ को कुछ देर के लिए तो सुन्न कर दिया-

लेकिन जड़ के तंतुओं ने उसकी कलाइयों को दबोचकर, साँपों का रास्ता रोक दिया-
ओह! अमृत से इस जड़ में अद्भुत जीवन शक्ति आ गई है। ये मेरे द्वारा किसी भी ... है, जो इसके लिए घातक हो सके। अब ये मेरा दम घोंटना चाहता है
लेकिन मेरा दम घोंटना इतना आसान नहीं है। क्योंकि मैं ऐसे किसी भी शिकंजे से
...इच्छाधारी कणों में बदलकर आसानी से बाहर निकल सकता हूं। पर यह चाल मुझे तो बचा सकती है, पर इस तोड़-फोड़ को नहीं...
...मेरे जहर का भी इस पर कोई खास असर होता नहीं दिख रहा, क्योंकि इसका आकार अति विशालकाय है
इसको मारने के लिए मुझे अपना पूरा विष खर्च कर देना होगा और ऐसा करना मूर्खता होगी
अब इसके अमृत वाले असर को कैसे काटूं?
नागराज के कुछ सोचने से पहले ही हमला दुबारा शुरू हो गया
ओह!
यह जड़ मेरा पीछा छोड़ने वाली नहीं है। बार-बार इच्छाधारी कणों में बदलकर बचाव करते रहने से मैं बचता रहूंगा, और इसके अन्य तंतु ... फैलते रहेंगे
शायद मुझे कोई ऐसा तरीका सोचना पड़ेगा, जो मेरा विष भी बचा दे और इन विनाशकारी जड़ों को नष्ट भी कर सके। इससे पहले तो मैंने 'अमृत' के विपरीत को अपने जहर के ... से- अब मिल गया रास्ता
नागराज अपनी अनियंत्रित नागशक्ति से जड़ को खींचता हुआ एक खास तरफ ले चला -

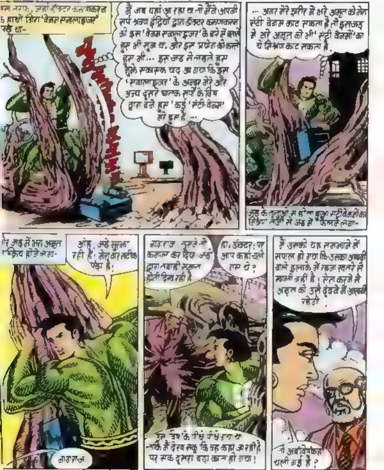
स तरफ, जहां डॉक्टर कल्पकान्त के हाथों गिरा 'वेनम एनालाइजर' रखा था-
मैं जब यहां आ रहा था तो मैंने अपनी सर्प श्रवण इंद्रियों द्वारा डॉक्टर कल्पकान्त को इस 'वेनम एनालाइजर' के बारे में बताते हुए भी सुना था, और इस प्रयोग को करते हुए भी... इस जड़ से लड़ते हुए मुझे एकाएक याद आ गया कि इस 'एनालाइजर' के अन्दर मेरे और अन्य दूसरे घातक सर्पों के विष द्वारा बने हुए 'कई 'एंटी-वेनम' भरे हुए हैं...
... अगर मेरे शरीर में भरे अमृत को मेरा एंटी-वेनम काट सकता है तो इस जड़ में भरे अमृत को भी 'एंटी वेनमों' का ये मिश्रण काट सकता है।
जड़ के टुकड़ों में फैला हुआ एंटी-वेनमों का मिश्रण तेजी से जड़ में फैलने लगा-
र जड़ में भरा अमृत निष्क्रिय होने लगा-
ओह, जड़ें मुरझा रही हैं। मेरा वार सटीक पड़ा है।
नागराज, तुमने तो कमाल कर दिया। जड़ों द्वारा तबाही समाप्त होती दिख रही है
हां, डॉक्टर! पर आप कहां चले गए थे?
मैं उसके पीछे-पीछे गया था ताकि मैं देख सकूं कि वह कहां जा रही है पर एक दूसरा बड़ा काम हो गया!
मैं उसको यह समझाने में सफल हो गया कि उसका आदमी वाले इलाके में रहना खतरे से खाली नहीं है। ऐसा करने से अमृत को उसे ढूंढने में आसानी रहेगी।
तो अर्धविषकन्या चली गई है?
नागराज

यह बताने के लिए शुक्रिया
कौन?
छिपकियों के उड़ने से मुझे डर
इतना आसान नहीं है

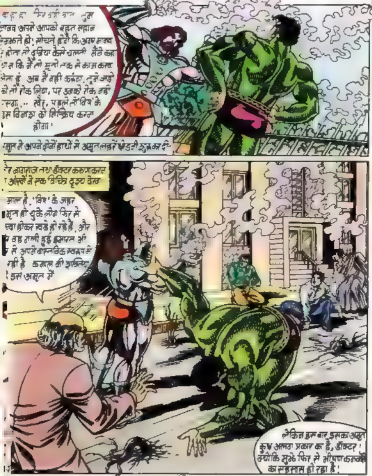
आदव अपने आपको बहुत महान समझते हो! सोचते होंगे कि अगर मानव न होता तो दुनिया कैसे चलती, जैसे कि मैं तो मूर्खों तक से काम करवा लेता हूं, अब मैं वही करूंगा, तूने अड़े को तो रोक लिया, पर इसको रोक नहीं सकेगा... खैर, पहले तो 'विष' के इस विनाश को निष्क्रिय करना होगा।
अमृत ने अपने दोनों हाथों में अमृत लहरें छोड़नी शुरू कर दीं-
और नागराज तथा डॉक्टर करुणाकर की आंखों ने एक विचित्र दृश्य देखा
'विष' के जहर से मृत हो चुके लोग फिर से ज़िन्दा होकर खड़े हो रहे हैं, और वह गली हुई इमारत भी अपने वास्तविक स्वरूप में आ रही है। कमाल की शक्ति है इस अमृत में
लेकिन इस बार इसका असर कुछ अलग प्रकार का है, डॉक्टर! क्योंकि मुझे फिर से भीषण कमजोरी का एहसास हो रहा है!

मैं समझ गया नागराज ! जैसे विष अलग अलग जहर मिश्रणों द्वारा अलग-अलग प्रकार की तबाही फैलाती है वैसे ही यह अमृत भी उन विभिन्न मिश्रणों को काटने के लिए अलग अलग प्रकार के अमृत फेंकता होगा तुम्हारा शरीर पहले वाले अमृत के लिए तो अभी भी प्रतिरोधक क्षमता रखता है, पर यह नया अमृत तुम्हारे जहर को फिर काट रहा है!
आऽऽऽह ! यानी मैं जब-जब अमृत द्वारा छोड़ी गई किसी नई अमृत लहरी का सामना करूंगा, तब-तब मुझ पर कमजोरी का दौरा पड़ेगा.
शायद आप ठीक कह रहे हैं! मुझमें फिर से शक्ति आ रही है! लेकिन जब तक मैं कमजोर रहूंगा, उस बीच कोई भी मुझ पर हमला करके मेरी जान ले सकता है
ऐसा ही लगता है नागराज। पर यह कमजोरी की स्थिति ज्यादा देर तक नहीं रहेगी जैसे ही तुम्हारी कोशिकाएं इस अमृत मिश्रण की संरचना पहचान लेंगी, वे अपने-आप प्रतिरोधक रसायन पैदा करना शुरू कर देंगी
तुम्हारे शरीर में ये प्रतिरोधक क्षमता अमृत की 'एंटीवेनम' पीने के कारण पैदा हुई है। तुम्हारी कोशिकाएं उसी के कारण अमृत की भी काट पैदा कर पा रही हैं। हो सकता है कि वह प्रतिरोधक रसायन पैदा करने की गति और तेज कर दे और तुमको कमजोरी कम देर के लिए महसूस हो।
मैं देव कालजयी से प्रार्थना करता हूं कि ऐसा ही हो! फिलहाल तो मुझमें लगभग पूर्ण शक्ति आ गई है! लेकिन... लेकिन...
.. सारी तबाही फिर से ठीक कर देने के बाद अब अमृत अपनी अमृत तरंगें क्यों फेंक रहा है?
विष को ढूंढने के लिए मदद नहीं कर रहा हूं नागराज। मुर्दों को जिन्दा कर रहा हूं अब मैं जिन्दों को अमृत पान करा कर अतिरिक्त जीवन शक्तियां नहीं दूंगा

को बढ़ा सदा कर नहीं बना रहा था-
अमृत की लहरें महानगर के अलग-अलग हिस्सों की तरफ लपकीं, पहली अमृत लहर महानगर के सन्यासेध घाट पर अंतिम संस्कार पा रहे एक शव से जा टकराई-
यह क्या है?
और धू-धू करके जल रहे शव में फिर से प्राण दौड़ने लगे-
हे भगवान, ये क्या हो रहा है?
कलियुग है... भगवान का नहीं!
इससे ही कुछ मिलती-जुलती घटना होना कब्रिस्तान में भी घटने जा रही थी-
यह तूने क्या किया मुझे, तूने कब्र खोदने के बजाए ...
पता भी चलता...
ये क्या है?
सड़क पर कुचली पड़ी एक कुत्ते की लाश का ...
दूसरों की जिन्दगी तबाह की जानी थी! सिर्फ एक मकसद के लिए-

और यह मकसद था-
विष की खोज-
बस! अब विष नहीं बच सकती, सर्पोन्मत्त से घेर लूंगा मैं उसे!
इस बार तेरा सम्पूर्ण मन काटना नागराज, वरना मैं सिर्फ जीवन देता ही नहीं, छीन भी लेता हूं.
ये जा रहा है! इसका पीछा करो नागराज
नहीं डॉक्टर। ये तो न जाने कहां-कहां भटकेगा! मुझे इससे पहले विष तक पहुंचना है.
फिर तुम क्या करोगे?
अभी तय नहीं किया है, डॉक्टर कल्याणकरन, फिलहाल तो मुझे यह पता लगाना है कि 'मूर्तों' को जिन्दा करने में अदृत का क्या तात्पर्य था. मैं अपने जासूस सर्पों से पूरे महानगर की रिपोर्ट लेता हूं.
नागराज, अपने जासूस सर्पों से मानसिक संकेत प्राप्त करने में जुट गया-
और अगले ही पल वह चौंक उठा-
मुझे तुरन्त जाना होगा डॉक्टर कल्याणकरन।
अदृत ने सचमुच कुछ मूर्तों को जीवित कर दिया है, और वे शायद 'विष' की तलाश में पूरे महानगर में आतंक और तबाही फैला रहे हैं!
नागराज तुरंत एक दिशा में रवाना हो गया-
खतरे के मानसिक संकेत कई स्थानों से आ रहे हैं. मैं किसी एक दिशा में ही जा सकता हूं। मैं फिलहाल उधर ही जाऊंगा, जहां खतरे के सबसे तीव्र संकेत आ रहे हैं.

खतरे के सबसे तीव्र संकेत महा-नगर के इस इलाके से आ रहे थे-
'विष' इस दिशा से आ रही है उसके ज़हर की गंध आ... ...ह
जलते शव के उस दिशा में बढ़ते कदमों को-
नागराज ने और तेज कर दिया-
मुझे यहां पहुंचने में थोड़ी देर हो गई है पर मैं इसको और नुकसान नहीं करने दूंगा
अमृत ने इसको जीवन शक्ति दी है। यानी इसकी अमृतरूपी जीवन शक्ति को मेरा विष काट सकता है।
नागराज ने अपनी तीव्र विष फुंकार 'वार' जलते शव पर किया
और शव लड़खड़ा उठा-

लेकिन उसने भी असली हरकत की उसकी नागराज ने उम्मीद नहीं की थी-
आऽऽह! अग्नि फुंकार! अमृत ने इसमें जीवन के अलावा और भी शक्तियां भर दी हैं.
मेरा शरीर जल रहा है... और.. और इस फुंकार में मौजूद अमृत-मिश्रण के कारण मुझ पर फिर से कमजोरी सी छा रही है.
इस आग को बुझाना होगा. जल्दी से जल्दी.
नागराज ने ज़मीन पर लोटकर आग बुझाने की कोशिश की—
लेकिन—
और आग ऐसे नहीं बुझ रही है. पर इसके बुझने का एक और तरीका मेरे पास है. कोई भी आग बगैर ऑक्सीजन के नहीं जल सकती.
मैं अगर अपने आपको अपनी ही विष फुंकार में घेर लूं तो वायु में मौजूद ऑक्सीजन का सम्पर्क मेरे शरीर से टूट जायगा...
—और आग बुझ जायेगी
बुझ गई आग, लेकिन इतनी देर में वह जलता हाथ कहां चला गया?
सड़क पर उसके पैरों के निशान और ये गड्ढे

मुझे इसको रोकना होगा! वरना अगर कहीं इसने 'विष' को ढूंढ निकाला, तो इसके जरिए अमृत तुरन्त ही 'विष' तक पहुंच जाएगा, और अगर इस वीराने में भी विष-अमृत का युद्ध हुआ तो महानगर के वासियों पर कुछ न कुछ तो असर आएगा ही!
मुझे इस युद्ध को रोकना होगा, और जब तक संभव हो इस युद्ध को टालने की कोशिश करनी होगी। और इसके लिए विष को अमृत से दूर रखना होगा। अमृत को विष का पता नहीं मिलना चाहिए.
'जलते शव' के पैरों के निशान का पीछा करते नागराज ने-
जल्दी ही 'जलते शव' को फिर से ढूंढ निकाला-
वह रहा, मेरी विष फुंकार एक बार इसको बेदम कर चुकी है तो दुबारा भी जरूर करेगी।
पर इस बार मैं फुंकार तब तक छोड़ता रहूंगा।
... जब तक इसका अमृत पूरी तरह से निष्क्रिय न हो... अरे! यह क्या?
अगर अपने ऊपर पड़ी परछाईं से सतर्क होकर नागराज-
तुरन्त इच्छाधारी कणों में बदल नहीं जाता तो उसका शरीर अपने-आप उस चट्टान के नीचे पिसकर चटनी बन जाता --

नागराज के तुलनात्मक से ही तीन पल बीत गए। और वे पल बीतते ही नागराज अपने असली स्वरूप में आ गया-
ओह! बाल-बाल बचा, पर ये चट्टान ठीक मुझ पर ही क्यों गिरी?
अगले ही पल नागराज को जवाब मिल गया-
आऽऽऽह, एक और मृत जीवित प्राणी, अब समझा कि ये चट्टान संयोग से मुझ पर नहीं गिरी, बल्कि इसे जान-बूझ कर मेरे ऊपर गिराया गया था
... शायद उस.. जलते मुर्दे को मेरी विष फुंकार से बचाने के लिए। पता नहीं अकूत ने मेरे कितने मृतों को जीवित किया हुआ है।
अचानक नागराज को चुप हो जाना पड़ा! क्योंकि हमला दो तरफ हो गया था-!
ओह! अब 'जलता मुर्दा' भी मुझ पर टूट पड़ा है, पर क्यों? और, कारण बाद में मालूम, पहले तो इन दोनों का इन्तजाम किया जाए।
दोनों ही मेरी विष फुंकार का स्वाद चखकर बेदम हो जाएंगे। लेकिन फुंकार का प्रयोग करने का मौका नहीं मिलेगा, जब इनका वार काट सकेगा।
ऐसे ये काफी आसान लगता है, क्योंकि एक मिट्टी निकला है क्योंकि ये शायद कब्र से निकला है और दूसरा अग्नि क्योंकि ये चिता से निकला है और आग तथा मिट्टी एक-दूसरे के दुश्मन होते हैं

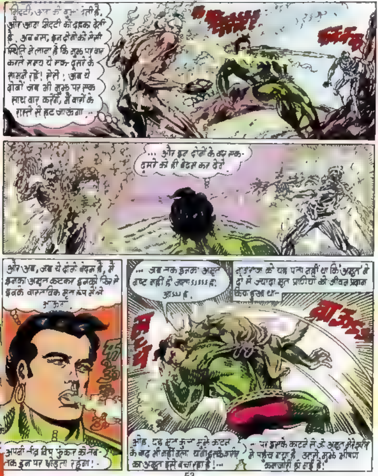
मिट्टी, आग को बुझा देती है, और आग मिट्टी को दहका देती है . अब बस, इन दोनों को ऐसी स्थिति में लाना है कि मुझ पर वार करते समय ये एक-दूसरे के सामने रहें! ऐसे ; अब ये दोनों जब भी मुझ पर एक साथ वार करेंगे, मैं वारों के रास्ते से हट जाऊंगा . .
... और इन दोनों के वार एक-दूसरे को ही बेदम कर देंगे .
और अब, जब ये दोनों बेदम हैं, मैं इनका अमृत काटकर इनको फिर से इनके वास्तविक मृत रूप में ले आऊंगा .
अपनी नील विष फुंकार को तब-तक इन पर छोड़ता रहूंगा! -
... जब तक इनका अमृत नष्ट नहीं हो जाता ... आऽऽऽ ह .
नागराज को यह पता नहीं था कि 'अमृत' ने दो से ज्यादा मृत प्राणियों को जीवन प्रदान किया हुआ था-
ओह, यह मृत कुत्ता मुझे काटने के बाद भी नहीं मरा . शायद इसके शरीर का अमृत इसे बचा रहा है! ...
... पर इसके काटने से जो अमृत मेरे शरीर में पहुंच गया है, उससे मुझे भीषण कमजोरी हो गई है!

और इस हालत में मैं इन तीनों प्राणियों का एक साथ सामना नहीं कर सकता और ये तीनों अगर एक साथ मुझ पर हमला करेंगे, तो मुझे जरूर मार डालेंगे और इस कमजोरी की हालत में मैं बचाव तक नहीं कर पाऊंगा पर - पर ये तीनों 'जीवित मृत' प्राणी 'विष' की तलाश छोड़ कर एकाएक मुझ पर क्यों टूट पड़े? जहां तक मैं जानता हूं, अकाल ने इन्हें त्यागे 'विष' की तलाश करने के लिए ही जीवन प्रदान किया था। ओऽऽऽ। कुछ-कुछ समझ में आ रहा है ...
... अब जब 'विष' ने या विष भरे पशुओं ने मुझ पर जहर मिश्रणों से हमला किया, तब-तब मेरे शरीर में गए 'जहर मिश्रणों' के खिलाफ मेरी शरीर की शिराओं ने प्रतिरोधक शक्ति पैदा कर ली, यानी मेरे शरीर में भरा 'विष' का जहर मिश्रण नष्ट नहीं हुआ बल्कि उसने मेरे शरीर को नुकसान पहुंचाना बन्द कर दिया। अब इतनी तीव्र विष फुफकार छोड़ने के कारण मेरे शरीर में भरा जहर मिश्रण भी ऊपर आ गया है, और ये तीनों उसी जहर मिश्रण का आभास पाकर मुझ पर हमला कर रहे हैं! यानी ये मुझे ही 'विष' समझ रहे हैं।
अगर मैं ठीक समझ रहा हूं तो इनको रोकने का एक आसान सा तरीका है। मैं अपने शरीर में भरे 'विष' के जहर मिश्रण को इन तीनों पर छोड़ देता हूं, अब ये जहर मिश्रण इनके शरीर में जाते ही...

दो एक दूसरे को 'विष' समझने लगेंगे, और फिर आपस में ही लड़ने लगेंगे; ऐसे!
लेकिन इस व्यवधान ने मेरा काफी समय नष्ट कर दिया है। मुझे नागविष को ढूंढना होगा, क्योंकि अमृत अब किसी भी क्षण यहां पर पहुंच सकता है।
लेकिन तभी एक भयानक विचार के कौंधते ही नागराज के कदम रुक गए—
नहीं, ऐसे नहीं। अब अमृत द्वारा जीवित किए गए कुत्ते के काटने का मुझ पर तेज असर हो सकता है तो स्वयं अमृत न जाने मेरा क्या हाल करेगा। कमजोर चाहे वो पल भर ही रहे, परन्तु इतनी देर में ही अमृत मेरा परलोक का टिकट कटा देगा
और 'विष' अधिक खतरनाक नहीं है। वैसे तो एक दूसरे के दुश्मन ही सही, पर मेरे तो दोस्त नहीं हैं। मुझे अपनी रक्षा का इंतजाम करने के बाद ही विष की तलाश में जाना चाहिए।
'विष' एक प्राचीन गुफा में छुपी बैठी थी—
थोड़ी देर पहले तक मुझे वातावरण में अमृत-लहरियों का आभास हो रहा था, अब वह आभास खत्म हो गया है। क्या अमृत यहां पर आकर वापस
अमृत अभी तक तो नहीं आया है, पर जल्दी ही आता होगा
कौन? नागराज, तुमने मुझे कैसे ढूंढ लिया?
अपने जासूस सर्पों की मदद से। और जिन अमृत लहरियों का तुमको आभास हो रहा था...

... वे अमृत की लहरियां उन मृत प्राणियों की थीं, जिनको अमृत ने चिता से उठाकर और कब्र से निकालकर जिन्दा किया था! और तुम्हारी तलाश में भेजा था। पर मैंने उनको तुम तक पहुंचने से रोक दिया.
अमृत के भेजे प्राणी ? और वे यहां तक पहुंच गए यानी... यानी अमृत भी अब यहां आता ही होगा। और पृथ्वी के चौबीस घंटे पूरे होने में अभी भी थोड़ा सा समय बाकी है.
फिर वही चौबीस घंटे का समय. इस 'समयसीमा' का क्या चक्कर है ?
अमृत भी चौबीस घंटे की बात कर रहा था!
यह जानकर अब क्या करोगे ? पर तुम मुझे अमृत से क्यों बचाना चाहते हो ? मैं तो तुम्हारी मित्र नहीं शत्रु हूं...
मुझे भी तुमसे कोई सहानुभूति नहीं है विष! मैं तुमको और अमृत को दूर-दूर रखकर सिर्फ उस विनाश को टालना चाहता हूं जो तुम्हारे और अमृत के टकराव से पैदा होगा।
विनाश ? कैसा विनाश ? तुम कहना...
गलत नहीं, विनाश तो होगा ही विष ..
... तेरा विनाश, मैंने तुझे ढूंढ ही लिया, और तेरे द्वारा किए गए विनाश को भी निष्क्रिय कर दिया है, और वह भी पृथ्वी के चौबीस घंटे पूरे होने के पहले-पहले!
मैं जीत गया विष, और तू हार गई.
खेल की यह बाजी मेरे नाम रही.
पर तूने मुझे ढूंढा कैसे अमृत! मेरे खोजी प्राणियों को तो नागराज ने रोक दिया था न ?

मैं उनके नहीं, नागराज के पीछे लगा था। यहां पर पहुंचते ही मुझे चट्टानों के बीच में से जाता हुआ नागराज नजर आ गया था! मैं समझ गया यह तुझे ही ढूंढने आया है। इसीलिए मैं इसके पीछे लग गया! इसके सर्पों ने इसको तुझ तक पहुंचाया, और इसने मुझको। बस!
यह करके तुमने नियम भंग कर दिया है अमृत! बेईमानी की है तुमने! नियमानुसार तुम सिर्फ अमृत प्राणियों के जरिए ही मुझे ढूंढ सकते थे। पर नागराज तुम्हारे अमृत द्वारा जीवित किया गया प्राणी नहीं है!
तुमने भी तो नागराज से जहर छीनकर अतिरिक्त जहर पाने की कोशिश की थी विष! और यह भी नियमों के विरुद्ध है। नियमानुसार किसी भी बाजी के बीच में हम अतिरिक्त शक्ति नहीं प्राप्त कर सकते!
तो फिर यह बाजी बगैर जीत हार के खत्म करो!
न तुम जीते, न मैं हारी!
बाजी! यह क्या कोई खेल खेल रहे थे तुम दोनों?
हां, नागराज! हमारा ऊपर जीवन बहुत नीरस है। उस उब को दूर करने के लिए हम ये खेल खेलते हैं! किसी भी ग्रह पर चले जाते हैं! एक उस ग्रह पर विनाश फैलाता है, और दूसरा उस विनाश को फिर से अपने वास्तविक रूप में ले आता है!
विनाश करने वाला! विनाश करते-करते छिपता फिरता है, और विनाश को निष्क्रिय करने वाला निष्क्रिय करते-करते उसे ढूंढता है।
पर यह काम उसे एक खास समयअवधि में करना होता है!
अब उस समयावधि के दौरान विनाश फैलाने वाला 'विष' पकड़ा गया तो अमृत जीतेगा, वरना विष जीतेगा!
हम अपना किरदार भी बदलते रहते हैं। कभी ये 'अमृत' बनता है तो कभी मैं! वैसे भी विष और अमृत एक ही वस्तु के दो रूप हैं। ठीक वैसे ही जैसे जीवन और मृत्यु!

तुम ये सारा विनाश और पुनर्निर्माण सिर्फ एक खेल के लिए करते हो? लोगों को इतना कष्ट और इतनी मानसिक यातना सिर्फ अपनी जीत या हार के लिए देते हो!
अब क्या करें? और कोई रास्ता भी तो नहीं है। पर हमारे दांव मामूली नहीं होते! काफी कुछ दांव पर रखा होता है। जैसे इस बार का दांव है- यह पृथ्वी! जो जीतेगा वही इसका अभिभावक बनेगा! पर तूने तो जीत-हार का फैसला होने ही नहीं दिया...
पर हम बिना जीत-हार वाला खेल नहीं खेलते! इस खेल का तो फैसला होना ही होगा! और इसका निर्णायक बनेगा तू! अब तू जिसे चाहेगा, वही इस पृथ्वी का स्वामी बनेगा! हम तेरे दाएं अंग में अमृत और बाएं अंग में जहर भर दे रहे हैं!
फ्सssss
आऽऽऽऽ ह!
अब तू जिसे चाहे स्वीकार कर ले, और जिसे चाहे अस्वीकार! जिसे तू स्वीकार कर लेगा वही यह बाजी जीतेगा!
तू अब तक हमारे वारों से बचता आया है! जरूर तेरे शरीर में प्रतिरोधक शक्ति पैदा होती रही होगी। पर इस बार के मिश्रणों का प्रतिरोध कर सकने वाली शक्ति इस पूरे ब्रह्मांड में नहीं है!

आऽऽऽह! मैं चुनूं तो किसको? जितना 'विष' खतरनाक है, उतना ही 'अमृत' खतरनाक है। पृथ्वी-- आऽऽऽह! पृथ्वी इन दोनों में से किसी के भी हाथों में सुरक्षित नहीं है। ओऽऽऽह! मेरे... होश गुम हो रहे हैं!
जल्दी सोच, नागराज! जल्दी! तेरे पास सिर्फ पांच पल और हैं! फिर या तो मेरा विष तुझे मार देगा या अमृत का अमृत! जल्दी सोच!
लेकिन नागराज पांच पलों तक यह निर्णय नहीं ले पाया--
और उसका तड़पता शरीर शांत पड़ गया--
यह तो मर गया! चलो, फिर से खेल शुरू करते हैं।
अब तो यह खतरा भी टल चुका है!
यह बताने के लिए धन्यवाद, विष और अमृत...
...मैं ऐसी ही किसी गुप्त बात के पता लगाने तक का इंतजार कर रहा था।
हां! यह था तो बहुत खतरनाक! मुझे तो कभी-कभी यह डर भी लग रहा था...
...कि अगर हमने हम दोनों की उंगलियां आपस में मिला दीं तो विपरीत शक्तियां मिलने से पैदा होने वाली ऊर्जा हमको अपने आप हमारे लोकों पर वापस भेज देगी!
यह मैं नहीं, मेरी केंचुली है, जिसके अंदर भरी हुई मेरी सर्प सेना उसे मेरे मानसिक संकेतों के अनुसार चला फिरा रही है!
मैं तो गुफा की छत पर चिपका यह सारा घटनाक्रम देख रहा था!
नागराज! तू! तू... तू तो उधर मरा पड़ा है!

खेल खेलना सिर्फ तुम दोनों ही नहीं, हम भी जानते हैं!
आऽऽह! हम अपने ग्रह की तरफ वापस रवाना हो रहे हैं नागराज! तू हमारे साथ चाल चल गया! तेरी केंचुली का चलने के साथ-साथ बोलना भी हमको बेवकूफ बना गया! पर तेरी केंचुली बोल कैसे रही थी?
वह मेरी केंचुली नहीं, मैं ही बोल रहा था! हमारी पृथ्वी पर एक कला होती है, जिसको हम 'वेन्ट्रिलो क्विज़म' कहते हैं! यानी आवाज 'फेंक' सकने की कला!
उसी कला का प्रयोग करके मैं ऐसे बोल रहा था ताकि मेरी आवाज मेरी दिशा से नहीं बल्कि मेरी केंचुली की तरफ से आती सुनाई दे!
अब पूछने का क्या फायदा है मूर्ख विष--
-- अब तो हम वापस वहीं जा रहे हैं, जहां से आए थे। और नियमों के अनुसार अब हम पृथ्वी के सौ सालों तक यहां नहीं आ सकते!
विष और अमृत चले तो गए थे, पर अपने पीछे कुछ सवाल भी छोड़ गए थे—
चलो! यानी पृथ्वी कम से कम अगले सौ सालों तक सुरक्षित है!
पर तब क्या होगा, जब पृथ्वी वाले विष और अमृत को भूल चुके होंगे, और सौ सालों के बाद वे वापस आएंगे!

समाप्त